Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-9 | Oct-2014
Available online at www.lbp.world

# पितृसत्तात्मक समाज की गतिशीलता और उसकी नियति

**विमल कुमार**
**बी0 ए0, एम0 ए0 (हिन्दी)**
**शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय, दरभंगा.**

**भूमिका–**

एक तरफ भारतीय समाज जहाँ पुत्र की प्राप्ति के लिए क्या–क्या नहीं करता? किस किस देवालय में मनौती नहीं मानता वहीं अवैध जन्मे पुत्र को देखकर समाज लगता है हिमालय के शिखर से नीचे गिर गया है, तो बेटी के जन्म पर मातम मनाता है, जिस बेटी की संतान वह मातम वह मातम मनाने वाला पुरूष भी है। नारी का शोषण पुरूष ही नहीं, नारी भी करती है। इसमें कई पात्र ऐसे है जो विमाता के कोप का शिकार बनते हैं। 'रामा' विमाता की क्रूरता का शिकार होकर घर से भाग जाता है। बिन्दा सौतेली माँ के कटु व्यवहार से तबाह है। कहीं–कहीं महादेवी ने नारी की कुरूपताओं अर्थात व्यक्तित्व के निषेधात्मक पक्ष को भी उछाला है। 'अंधे अलोपी' में माँ की ममता से अल्पावित हो अलोपी नये सिरे से जीवन जीने का प्रयास करता है, लेकिन वह एक नारी के छलपूर्वक व्यवहार से बिखर जाता है वह अलोपी की चल सम्पति को हस्तगत कर नौ–दो–ग्यारह हो जाती है। ''अलोपी इस ढ़लें हुए स्वर्ग में छः महीने ही रह सका। फिर सुना कि उसकी चतुर पत्नी सब कुछ लेकर उसे माया–पाष से सदा के लिए मुक्ति दे गई है।

वह बेचारा तो कई दिन तक विश्वास ही न कर सके खुद गड्ढे को टटोलकर देखता और फिर द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगता है।''

नारी अवसरवादी होती है। लेकिन माँ का आंचल सदैव अपनी संतान के सिर पर ढ़ाल की तरह फैला रहता है। अलोपी की स्वार्थी पत्नी अपने पूर्व में दो पतियों को मुक्ति दे आयी थी अब अलोपी की बारी थी। पर आलोपी की माँ अपने वरदान में मिले पुत्र को अब फिर दान में देना स्वीकार नहीं करती।''

घीसा समाज का एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें श्रद्धा, विनय, सहद्यता और उपकार की भावना है। वह समाज द्वारा प्रताड़ित होने के बावजूद भी ज्ञान के प्रति जिज्ञासु है। वह समाज से संघर्ष करता हुआ सदैव आस्थावान बना रहता है।

'बदलू कुम्हार की पत्नी 'रधिया' एक आदर्ष नारी है। अपने और बच्चों के दुःख को बदलू से इसलिए नहीं कहती कि बच्चों का दुख सुन कहीं बदलू का धीरज न खो जाय। इसलिए बदलू के पूछे जाने पर वह झूठ बोल देती है–

'एक बार मैंने रधिया को झूठ बोलने के सम्बन्ध में सफाई दी वह भी कुछ कम सारगर्भित न थी। उसका आदमी बहुत भोला है। उसका हृदय उतना कोमल है कि छोटी चीजों से भी धीरज खो बैठता है। घर की दषा ऐसी नहीं कि उतने जीवों को दोनों समय भोजन भी मिल सके। इसी से वह अपने और बच्चों के छोटे–मोटे दुःख को छिपा जाती हैः अब भगवान उसे परलोक में जो चाहे दंड दे, पर किसी का कुछ

छीन लेने के लिए वह झूठ नहीं बोलती है। समाज में आज भी रधिया जैसी नारियां है, जिसके कारण पुरूष धन्य है।

'श्रृंखला की कड़ियाँ भारतीय नारी के अभिशापों की करूण चीत्कार है। नारी मुक्ति के उपायों की ओर गहन चिंतन और विद्रोही तेवर। अन्याय के प्रति असहिष्णु महादेवी की स्वर यहाँ आहत और उग्र है। इस पुस्तक का समर्पण इसकी पूरी अन्तर्वस्तु को व्यंजित कर देता है' जन्म से अभिषप्त, जीवन से संतप्त, किन्तु अक्षय वात्सल्य वरदानमयी भारतीय नारी को।''

भारतीय नारी एक तरफ पवित्र देव मंदिर की अधिकष्ठात्री देवी है तो दूसरी ओर अपने गृह के मलिन कोने में बन्दिनी थी। आज की नारी अपने को भले स्वछंद कह ले, पुरूष भी यह कहे कि मेरे घर की नारियां अब पूरी स्वतंत्रता से जी रही है। जीवन के तमाम क्षेत्रों में उसका योगदान है। लेकिन सामाजिक सीमा रेखाओं का उल्लंघन वह नहीं कर सकती। महादेवी ने लिखा है कि ''आज की विद्रोह शील नारी व्यावहारिक जीवन में अधिक कठोर हैः गृह में अधिक निर्मम और शुष्क, आर्थिक दृष्टि से अधिक स्वाधीन, सामाजिक क्षेत्र में अधिक स्वच्छंद, परंतु अपनी निर्धारित रेखाओं की संकीर्ण सीमा की बन्दिनी है। महादेवी आगे लिखती है– ''अर्वाचीन समाज में या तो स्त्रियों में स्त्रिवंचित स्वतंत्र विवेकमय व्यक्तितत्व का विकास ही नहीं हो सका है या उनकी प्रत्येक भावना में, चरित्र में, कार्य में पुरूष की भावनाः चरित्र और कार्य की प्रतिकृति झांकती रहती है। इसी से एक का निरादर और दूसरी से अविराम संघर्ष।''

महादेवी का उक्त कथन आज के परिप्रेक्ष्य में सोलह आने सत्य सिद्ध हो रहे हैं, बिहार में पंचायती राज व्यवस्था लागू है, यहाँ महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत सीट आरक्षित है। आज महिलायें वार्ड सदस्य से लेकर, जिला पार्षद और पंचायत समिति के प्रमुख तक की कुर्सी पर आसीन है। लेकिन किसी भी मुद्दे पर वह अपना स्वतंत्र विचार नही रख सकती। बिना पति से पूछे एक कदम भी नहीं चलती। यहाँ तक कि आये दिन इस बात के लिए हंगामा होता रहा है कि मुखिया पति ने अपुक बैठक की अध्यक्षता की जो सरासर गलत है। अर्थात् महादेवी का नारी विषयक चिंतन समसामयिक और यथार्थ बोध से परिपुष्ट है। इस संदर्भ में महादेवी ने लिखा है– ''जिन विदुषी महिलाओं ने घर और बाहर दोनों प्रकार उत्तरदायित्व को अपनाया उनका जीवन भी प्रायः समाज का आदर्श नहीं बन पाया।''

हिन्दू समाज ने उसे (नारी को) अपनी प्राचीन गौरव गाथा का प्रदर्शन मात्र बना कर रख छोड़ा है और वह (नारी) भी मूक निरीह भाव से उसको बहन करती जा रही है। शताब्दियां पर शताब्दियां बीती चली जा रही है। समय की नहरों में परिवर्तन पर परिवर्तन बहते आ रहे हैः परिस्थितियां बदल रही है, परंतु समय केवल स्त्री को जिसे उसने दासता के अतिरिक्त और कुछ देना नहीं सीखा। प्रलय की उथल–पुथल में भी षिला के समान स्थिर देखना चाहता है। ऐसी स्थिरता मृत्यु का श्रृंगार हो सकती है, जीवन का नहीं। अवश्य ही मृत्यु में भी एक सौंदर्य है, परंतु वह जीवन के रिक्त स्थान को नहीं भर सकता।''

आज जब स्त्री मुक्ति के प्रसंग पर बहसे होती हैं तब परंपरा के पक्षधर यह कहकर भारतीय परंपरा में स्त्री की स्वाधीनता और अधिकार की पक्षधरता की बातें करते हैं कि मैत्रेयी जैसी स्वतंत्र स्त्री भी परंपरा में है। वहीं मैत्रेयी की सामाजिक स्थिति पर विचार करते महादेवी वर्मा ने लिखा है– ''गृह की वस्तुमात्र समझी जाने वाली स्त्री ने कभी जीवन को कितनी गंभीरतामयी दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया थाः पर उसे प्रत्युत्तर में क्या मिला? इस प्रसंग में महादेवी वर्मा ऋषि याज्ञवल्क्य के उस कथन का उल्लेख करती है जो वन प्रस्थान के समय वह मैत्रेयी से कहते हैं– ''धन से तुम सुखी हो सकोगी अमर नहीं।'' यानी कि स्त्री को लालची धन बनाता है। परूष उस धन के सहारे ही उस पर प्रभुत्व स्थापित करता है। पर कहीं न कहीं मसला उस सामाजिक पराधीनता का है जिसे भारतीय समाज में स्त्रियां पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण ग्रहण करने को बाध्य होती है।

महादेवी वर्मा मानती है कि भारतीय समाज एवं परंपरा के इतिहास में मैत्रेयी, सती–गोमा, सीता, द्रोंपदी आदी जैसी स्त्रियां है, जो या तो पुरूष सत्ता को चुनौती देती है अथवा उनके समानांतर खड़ा होने

की कोषिष करती है पर सवाल है– क्या समाज उनके उस रूप को स्वीकार कर पाता है? पितृसत्तात्मक समाज की गतिषीलता और उसकी नियती का उल्लेख करते हुए महादेवी ने लिखा है–

''आज भी जब सारा गतिशील संसार निरंतर परिवर्तन की अनिवार्यता प्रमाणित कर रहा है, स्त्रियों के जीवन को काट छाटकर उसी साचे के बराबर बनाने का प्रयत्न हो रहा है जो प्राचीनतम युग में ढ़ाला गया था। प्राचीनता की पूजा बुरी नहीं है, उसकी दृढ़नींव पर नवीनता की भित्ति खड़ी करना भी श्रेयस्कर है, परंतु उसकी दुहाई देकर जीवन को संकीर्णतम बनाते जाना और विकास के मार्ग को चारों ओर से रूद्ध कर लेना किसी जीवित व्यक्तित्व पर समाधि बना देने से भी अधिक क्रूर और विचारहीन कार्य हैं।

**पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था**

पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था, (पितृसत्तात्मक) में स्त्री की यह वही छवि है, जिसके खिलाफ महादेवी वमा आवाज उठाती है एवं स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य के सवाल पर विचार करते हुउ एक ऐसी व्यवस्था की मांग करती है जिसमें स्त्रियां पुरूष से भिन्न अपनी अलग हैसियत कायम कर सके। उनके कार्यक्षेत्र की भिन्नता तो आवष्यक ही नहीं अनिवार्य है। स्त्री की स्वाधीनता के वे सारे रास्ते धीरे–धीरे बन्द होते गए जो उन्हें पुरूष से भिन्न स्त्री के रूप में सामाजिक जीवन की मुख्यधारा में स्थापित कर सके। अर्थ स्वातंत्र्य के सवाल पर पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था को स्त्री की आर्थिक गुलामी के लिए सर्वाधिक जिम्मेवार ठहराती है।

महादेवी समाज व्यवस्था की पहली नींव (परिवार में) स्त्री की बुद्धि का परिणाम मानती है। पुरूष का जीवन संघर्ष से प्रारंभ होता है और स्त्री का आत्मसमर्पण से। जीवन के कठोर संघर्ष में जो पुरूष विजयी प्रमाणित हुआ, उसे स्त्री ने कोमल हाथों में जचमाल लेकर स्निग्ध चितवन से अभिनंदित करके और स्नेह–प्रवण आत्म निवेदन से अपने निकट पराजित बना डाला। किसने पुरूष की बर्बरता को पराभूत कर उसकी सुप्त भावना को जगाया। इन पवित्र गृहों की नींव स्त्री की बृद्धि पर रखी गयी है। पुरूष की शक्ति पर नहीं।''

इस समय भारतीय नारी के पास कौन सा ऐसा विशेष गुण नहीं है; जिसे पाकर किसी देश की मानवी देवी न बन सकती हो? उसमें उस सहन शक्ति की सीमा समाप्त है, जिसके द्वारा मनुष्य घोर से घोरतर अग्निपरीक्षा हँसते–हँसते पार कर सकता है और अपने लक्ष्य के मार्ग में बाधाएँ पर बाधाएँ देखकर नहीं सिहरता। उसमें वह त्याग है जो मनुष्य को छुद्र से छुद्र स्वार्थ वृत्ति को क्षण में नष्ट कर डालता है और उसे अन्य के कल्याणार्थ अपनी आहुति के लिए प्रस्तुत कर देता है। उसमें मनुष्य के देवता की पंक्ति में बैठने देनेवाली पवित्रता है, जो मरना नहीं जानती तथा उसमें हमारी संस्कृति का वह कोष है जिसकी किसी अन्य के द्वारा रक्षा संभव ही नहीं है। वह आज भी त्यागमयी माता, पवित्र पत्नी, स्नेहमयी बहिन और आज्ञा कारिणी पुत्री है।''

इस तरह महादेवी वर्मा रेखाचित्रों में चित्रित सामाजिक चेतना समसामयिकता के परिवेश से परिनिष्ठित है।

**समाज के सबसे निचले तबके के जीवन का संघर्ष**

समाज के सबसे निचले तबके के जीवन का संघर्ष बेनीपुरी के लेखन की एक बड़ी विशेषता रही है और यह संभव हुआ है उनके विद्रोही स्वभाव और सामाजिक आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी से। उनके रेखाचित्रों में भारतीय समाज की विडम्बनाओं का यथार्थ और प्रभावकारी चित्रण हुआ है। वे अपने रेखा चित्रों में सामंती समाज की त्रासदियों को झेल रहे जीवंत पात्रों के माध्यम से अपने समय और समाज पर ऊँगुली रखते है। इन रेखा चित्रों में उनकी संवेदनषीलता ही नहीं, गहरी अर्न्तदृष्टि की भी झलक मिलती है। रूपा की आजी, सुभान खाँ, मंगल, बैजू मामा, सरयू भैया, बलदेव जैसे पात्र आज भी इसलिए याद आते हैं, क्योंकि वे सिर्फ बेनीपुरी के रेखाचित्रों के पात्र नहीं, हमारे समाज के जीवत अवयव है।

ग्रामीण समस्याओं के चित्र बेनीपुरी, श्रीराम शर्मा, महादेवी वर्मा, प्रभाकर द्विवेदी, मक्खनलाल शर्मा, शिवप्रसाद सिंह आदि ने दिये हैं। इन रेखाचित्रों में ग्रामीण अंचलों में प्रसारित अषिक्षा, सामंती

संस्कारवादिता, छूआछूत, जातिबिरादरी, अकर्मण्यता, बेकारी, आर्थिक परावलम्बन तथा शोषण की जटिलतम परिस्थितियाँ, कुसंस्कार, परम्परानुमोदन के प्रति अन्धभक्ति, धर्म और जादू टोना का प्रभाव, दवा–दारू का अभाव, कर्ज और सरकारी महकमों का अजस्त्र शोषणमय लदाब, आपसी फूट तथा मुकदमेबाजी आदि सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित किया गया है।

**निष्कर्ष**–

बेनीपुरी ने अपने रेखाचित्रों में इस सीमा पर पैर जमाकर ही नहीं झंडा गाड़कर खड़े हैं, अपितु विषयवस्तु के अंग के रूप में उन्होंने कई समस्याएँ उठायी हैं और संभवतः हर समस्या का परोक्ष रूप में उत्तर भी दिया है। 'गोशाला' में उन्होंने वृद्धों के आश्रय की समस्या उठायी है। 'रूपा का आजी' में रूढ़ि और अन्धविष्वास की भीषण परिणाम कारणी समस्या दर्षायी है। 'सरजू भैया' में ग्राम 'पनिहारिन', 'कुदाल', 'कलाकार', 'दीपदान' इत्यादि में आर्थिक विषमता की समस्या, सुभान खाँ मे हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष की समस्या, बैजू मामा में सामाजिक परिस्थिति जन्य अपराधी मनोवृत्ति एवं दोषपूर्ण न्याय व्यवस्था की समस्या, यह और वह, 'पनिहारिन', 'दीपदान', 'हलवाहा', 'लालतारा' इत्यादि रेखाचित्रों में आर्थिक शोषण की समस्या 'रोटी और शराब' में कलाकारों की निर्धनता ही समस्या, 'हरसिंगार' में स्त्रियों के शोषण की समस्या, छब्बीस साल बाद' में बेमेल विवाह की समस्या, 'मीरा नाची रे' में नारी पराधीनता की समस्या अंकित हैं''।

**संदर्भ सूची**–

1. महादेवी वर्मा अतीत के चलचित्र–पृ0 63–64
2. वही – 79
3. वही 78
4. वही पृ0 106
5. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ–समर्पण
6. वही –15
7. वही –15
8. वही –25–26
9. वही –127
10. आजकल मार्च – 2007 पृ0 46
11. वही, पृ0 46